Co-Curricular Activities

विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु इन क्रियाओं का ज्ञान अति आवश्यक है एक समय था जब इन क्रियाओं का कोई महत्व नहीं दिया जाता था। केवल पाठ्य सामग्री का अध्ययन करवाना ही अध्यापक का मुख्य लक्ष्य होता था। लेकिन आधुनिक वातावरण में पाठ्य-सामग्री क्रियाओं के बिना विद्यार्थी का ज्ञान अधूरा माना जाता है कहा भी गया है कि

" विद्यालय केवल औपचारिक शिक्षा का ही स्थान नहीं है, यहाँ का प्रमुख कार्य केवल ज्ञान के भण्डार का संप्रेषण करना है

MEANING ⟹ विभिन्न विषयों के शिक्षण कार्य के अतिरिक्त स्कूल में आयोजित की जाने वाली सभी क्रियाएं जिनसे बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है, पाठ्य सहगामी क्रियाएं कहलाती है।

DEFINITION ⟹ माध्यमिक शिक्षा आयोग ⟹ "

"पाठ्य - क्रियाओं की भांति सहगामी क्रियाएं भी विद्यालयी क्रियाओं का अभिन्न अंग है और इनके उचित संगठन के लिए उतनी ही सतर्कता की आवश्यकता है। यदि इन क्रियाओं का संचालन समुचित ढंग से किया जाए तो ये बालक की रुचियों, मूल्यों और अभिवृत्तियों को विकसित करने में सहायक हो सकती है।"

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रकार ⟹

पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है —

1 ⟹ शारीरिक क्रियाएं।

2 ⟹ अवकाश के समय संबंधी क्रियाएं।

3 ⟹ सामाजिक कल्याण संबंधी क्रियाएं।

4 ⟹ सांस्कृतिक विकास क्रियाएं।

5 ⟹ नागरिकता विकास क्रियाएं।

6 ⟹ नैतिक विकास क्रियाएं।

⟹ उत्पादक क्रियाएं।

सहगामी क्रियाओं का महत्व

⟹ ये अध्यापकों विद्यार्थियों के साथ-२ प्रशासकों के लिए अति महत्वपूर्ण है इन्हीं क्रियाओं के माध्यम से औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा में उचित समन्वय हो पाता है

इनका महत्व इन प्रकार है —

1 **शारीरिक विकास** ⟹ पुस्तकीय ज्ञान से केवल बुद्धि का विकास होता है सहगामी क्रियाओं से शारीरिक और कलात्मक विकास होता है

2. **सामाजिक विकास** ⟹ सभी सहगामी क्रियाएं समूह में की जाती है खेल, नाटक, NSS आदि इससे सामाजिक विकास होता है जो देश को समृद्ध और शक्तिशाली बनाता है

3. **मनोरंजनात्मक महत्व** ⟹ छात्र टोली बनाकर, नृत्य, वाद-विवाद, भाषण, समूह गान आदि क्रियाओं में भाग लेते है इससे विद्यार्थियों का मनोरंजन होता है।

4. **नैतिक मूल्य** ⟹ सहगामी क्रियाएं मिलजुलकर की जाती है इससे श्रम करने, निष्पक्ष

निस्वार्थ कार्य करने और निष्पक्षता की भावना का विकास होता है।

5 **समय का सदुपयोग** ⟹ अध्यापन कार्य के पश्चात सहगामी क्रियाएं की जाती है। सहगामी क्रियाओं में लगे रहने से समय का सदुपयोग होता है।

6. **नेतृत्व के अवसर** ⟹ प्राप्त सहगामी क्रियाओं से नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। सहगामी क्रियाएं, विद्यार्थी अध्यापक के मार्गदर्शन में करते है। अध्यापक, विद्यार्थियों को सहगामी क्रियाएं स्वयं करने और नेतृत्व करने का अवसर प्रदान करता है।

7 **स्व - अनुशासन** ⟹ विद्यार्थी विभिन्न सहगामी क्रियाओं में भाग लेते है। इनमें नियमों का पालन करना होता है किसी भी सहगामी क्रिया के करते हुए नियमों के पालन की आदत पड जाती है तथा स्व- अनुशासन की भावना आती है।

TIME TABLE

समय सारणी को विद्यालय का दर्पण माना जाता है क्योंकि इसमें विद्यालय की सम्पूर्ण शिक्षा - प्रक्रिया एवं योजनाएं प्रतिबिम्बित होती है समय - सारणी जहाँ एक तरफ शैक्षिक प्रक्रिया को विधिवत चलाने में सहायक है वहीं दूसरी तरफ अनुशासन बनाने में भी सहायक है शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने और सुचारू रूप से चलाने में समय सारणी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

MEANING ⟹ समय सारणी समय के अनुरूप घटने वाली घटनाओं के संगठन की सूची है।
जैसे - प्रातः कालिन सभा, अध्ययन का समय, आधी छुट्टी का समय, पुस्तकालय पीरियड आदि।

DEFINITION ⟹ **डा० जसवन्त सिंह** "समय - सारणी स्कूल का स्पार्क प्लग है जो स्कूल के विभिन्न कार्यों और कार्यक्रमों को संचालित करता है।"

IMPORTANCE OF TIME TABLE ⟹

सुव्यवस्थित समय-सारणी ही व्यवस्थित मन का निश्चित बिन्दु है बिना समय सारणी के किसी भी विद्यालय की अवस्था बिना लगाम के घोड़े के समान होती है जिसका कोई निश्चित लक्ष्य नहीं होता है

समय-सारणी का महत्व निम्न बातों से स्पष्ट किया जा सकता है —

1 **भौतिक और मानवीय संसाधनों का सदुपयोग** ⟹ किसी भी विद्यालय के भौतिक और मानवीय, दो प्रकार के साधन होते हैं इन साधनों का उचित प्रयोग तभी संभव है जब विद्यालय में प्रत्येक कार्य समुचित योजना के तहत पूर्ण होता है तथा यह समय-सारणी द्वारा ही संभव है।

कार्य भार का सही वितरण ⟹ समय सारणी द्वारा शिक्षक के कार्यभार को समान रूप से बाटने में सहायता मिलती है।

अनुशासन को बढ़ावा देना ⟹ समय-सारणी अध्यापक तथा विद्यार्थी को व्यस्त रखती है जिससे स्कूल में अनुशासन बना रहता है।

1 समय तथा शक्ति की बचत

⟹ यह स्कूल के कार्य को नियमित करती है तथा अनावश्यक पुनरावृत्ति, भ्रांति तथा अव्यवस्था से बचाती है।

5. समायोजन में सहायक

⟹ अच्छा टाइम टेबल विद्यार्थियों की योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुसार कार्य की व्यवस्था करता है जिससे स्कूल कार्य के साथ-2 विद्यार्थियों का उचित समायोजन संभव हो जाता है।

. अच्छी आदतों का निर्माण

⟹ समय-सारणी द्वारा अध्यापकों तथा विद्यार्थियों में अच्छी आदतों जैसे अनुशासन, नियमितता, कर्तव्य परायणता, समय-पालन आदि का विकास किया जाता है।

नियमित प्रगति

⟹ समय सारणी द्वारा न तो किसी कार्य की उपेक्षा की जाती है और न ही किसी क्रिया को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है यह सभी विषयों की नियमित प्रगति को सुनिश्चित करती है।

INSTRUCTIONAL MATERIAL

प्रत्येक अध्यापक यह चाहता है कि उसके द्वारा प्रस्तुत कक्षा अनुदेशन अधिक से अधिक प्रभावशाली हो तथा उसे स्पष्ट रूप से समझा तथा ग्रहण किया जाए ताकि वह अपनी छाप विद्यार्थियों के मस्तिष्क पर स्थायी रूप से अंकित हो जाए।

दूसरे शब्दों में अच्छे अनुदेशन का लक्ष्य होता है प्रभावशाली संप्रेषण प्रक्रिया तथा अनुदेशन के उपयुक्त परिणाम।

MEANING ⟹ ऐसी सभी सामग्री, उपकरण, तथा स्त्रोत जो एक कक्षा अध्यापक को उत्तम संप्रेषण प्रक्रिया, स्वस्थ कक्षा-कक्ष अन्तः क्रिया तथा अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहयोग प्राप्त प्रदान करे उसे अनुदेशनात्मक सामग्री कहा जाता है।

DEFINITION ⟹ शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार ⟹

ऐसी सभी सामग्री या साधन जो विद्यार्थियों को देखने और सुनने संबंधी शक्तियों को प्रभावित करते हुए। एक शिक्षक के अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में उसकी

सहायता करते हैं दृश्य- श्रव्य सहायक सामग्री या साधन कहलाती है।"

TYPES OF INSTRUCTIONAL AID ⟹

TYPES
- ⟹ (i) पाठ्य सामग्री
- ⟹ (ii) दृश्य - श्रव्य सामग्री

1 **पाठ्य सामग्री** ⟹ इस प्रकार के वर्ग में निम्न अनुदेशनात्मक सामग्री को शामिल किया जा सकता है —

क पाठ्य - पुस्तक
ख पूरक पुस्तक
ग अभ्यास पुस्तिका
घ शिक्षक निर्देशिका
ङ. संदर्भ ग्रंथ
च शब्द कोष
छ समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं

क **पाठ्यपुस्तक** ⟹ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अनुदेशनात्मक सामग्री के रूप में पाठ्यपुस्तक का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

ii) **पूरक - पुस्तकें** ⟹ बालकों को दो प्रकार से अध्ययन कराया जाता है: सूक्ष्म अध्ययन तथा स्थूल अध्ययन

स्थूल अध्ययन के लिए पूरक पुस्तकों की सहायता ली जाती है।

iii) **अभ्यास - पुस्तिका** ⟹ प्राथमिक कक्षाओं और निम्न माध्यमिक कक्षा के बच्चों में भाषायी योग्यताओं का विकास करने के लिए अभ्यास पुस्तिका का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

iv) **समाचार पत्र - पत्रिकाएं** ⟹ समाचार पत्र तथा पत्रिकाएं महत्वपूर्ण अनुदेशनात्मक सामग्री है।

v) **शब्दकोश** ⟹ शब्दकोष से अभिप्राय है 'शब्दों का खजाना'। शब्दकोष महत्वपूर्ण अनुदेशनात्मक सामग्री है।

vi) **शिक्षक - निर्देशिका** ⟹ यह शिक्षक के अनुदेशनात्मक कार्य को प्रभावशाली एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने में शिक्षक का मार्गदर्शन करती है।

२. दृश्य - श्रव्य सहायक सामग्री

⟹ इन साधनों का सामान्यता निम्न तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है —

1) श्रव्य साधन

⟹ इस वर्ग में उन सभी साधनों को शामिल किया जाता है जिनकी सहायता से सुनकर ज्ञान प्राप्त किया जाता है अध्यापक द्वारा निम्न श्रव्य साधनों का प्रयोग किया जाता है —

* **ग्रामोफोन** ⟹ शिक्षण प्रक्रिया में आधुनिक श्रव्य उपकरणों में सबसे सरल, सस्ता साधन ग्रामोफोन है शब्दवाचन, वार्तालाप, भाषण की सबसे अच्छी शिक्षा ग्रामोफोन द्वारा दी जाती है।

* **टेपरिकार्डर** ⟹ इसमें विभिन्न विषयों से संबंधित विचारों को टेप में भर लिया जाता है और फिर टेपरिकार्डर पर उस टेप को चलाकर विषय-वस्तु को समझाया जाता है

* **रेडियो** ⟹ यह श्रव्य सामग्री का महत्वपूर्ण साधन है इससे उनमें ध्यानपूर्वक सुनने की योग्यता का विकास होता है।

ii) **दृश्य साधन** ⇒ इस वर्ग में उन साधनों को शामिल किया जाता है जिनके द्वारा विद्यार्थी स्वंय अपने नेत्रों से देख कर वास्तविक ज्ञान प्राप्त करते है। मुख्य दृश्य साधन निम्न है —

* **BLACKBOARD** ⇒ यह सबसे पुराना तथा ज्यादा प्रयोग में लाया जाने वाला अनुदेशनात्मक साधन है इसका प्रयोग मुख्य बिन्दुओं तथा वाक्यों को दर्शाने के लिए किया जाता है। राष्ट्रीय नीति द्वारा ब्लैकबोर्ड का कक्षा - कक्ष में प्रयोग अनिवार्य कर दिया गया।

* **CHART** ⇒ चार्ट एक महत्वपूर्ण दृश्य सामग्री है यह विषय- वस्तु को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण योगदान देते है चार्ट द्वारा प्रस्तुत पाठ्य- सामग्री बच्चों के मानसिक स्तर पर अनुकूल छाप छोड़ती है और विषय- वस्तु को स्पष्ट करती है।

iii) **श्रव्य - दृश्य सामग्री** ⟹ इस वर्ग में वे सभी साधन शामिल होते है जिसमे विद्यार्थी देखकर व सुनकर ज्ञान प्राप्त करता है मुख्य दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री निम्न है —

* **टेलिविजन** ⟹ टेलिविजन दृश्य- श्रव्य साधन है इसमें बच्चे की कान और नेत्र दोनों इन्द्रियाँ सक्रिय होती है यह अंग्रेजी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'दूर से देखना'।

* **विडियो** ⟹ यह भी दृश्य - श्रव्य उपकरण की श्रेणी में आता है वीडियों की सहायता से चलचित्रो के मन - चाहे कैसेट टेलिविजन के पर्दे पर दिखाया जाता है।

* **नाटक** ⟹ नाटक शिक्षा का प्राचीनतम दृश्य - श्रव्य साधन है प्रत्येक कक्षा की भाषा की पाठ्यपुस्तक में एक - दो नाटकों का संकलन अवश्य होता है इसके द्वारा बच्चे शब्दों और वाक्यों को सजीव ढंग से बोलना सीख जाते है।

CUMULATIVE RECORD

MEANING ⟹ संचित अभिलेख वह अभिलेख होता है जिसमें प्रत्येक छात्र के विषय में संपूर्ण जानकारी का रिकार्ड होता है।

बच्चों से संबंधित सभी शारीरिक, सामाजिक, नैतिक तथा मानसिक जानकारियों को अध्यापक या लिपिक रजिस्टर में चढ़ाता है यह दैनिक कार्य बन जाता है क्योंकि अध्यापक को प्रतिदिन छात्रों के विषय में कुछ न कुछ नई नई नई जानकारी मिलती ही रहती है जिसे उसी समय रजिस्टर में दर्ज करना होता है

IMPORTANCE ⟹ संचित अभिलेख छात्र मूल्यांकन में महत्वपूर्ण योगदान देता है संचित अभिलेख की महत्व निम्न निम्नलिखित है —

1. **व्यावसायिक मार्गदर्शन में सहायक** ⟹

⟹ संचित अभिलेखों की सहायता से विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता अनुरूप मार्गदर्शन दिया जा सकता है।

ii) **निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति की जानकारी**

⟹ संचित अभिलेखों का इसलिए भी महत्व है कि संचित अभिलेख शिक्षा के निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति की सही जानकारी देते हैं।

iii) **विभिन्न प्रकार की बुद्धि वाले छात्रों का ज्ञान**

⟹ संचित अभिलेख से अध्यापक को कक्षा के विभिन्न छात्रों की मानसिक स्थिति का पता लग जाता है।

iv) **रुचि की अभिव्यक्ति** ⟹ संचित अभिलेख विद्यार्थियों की रुचि को अभिव्यक्त करते हैं इससे छात्रों का सही प्रकार से मार्गदर्शन किया जा सकता है।

v) **मंदबुद्धि छात्रों के लिए वरदान** ⟹ संचित अभिलेखों की सहायता से अध्यापक बौद्धिक रूप से पीछे बालकों में सुधार कर सकते हैं।

SCHOOL BASED ACTIVITIES

SATURDAY ACTIVITIES

प्रत्येक शनिवार बच्चों को बिना स्कूल बैग के सहगामी गतिविधियों के लिए बुलाया जाता है। बच्चों से खेल-कूद, चित्रकला, संगीत आदि सहगामी गतिविधियां करवाई जाती है।

बाल सभा का आयोजन किया जाता है जिसमे बच्चे कविता, कहानियां, निबंध, प्रश्नोत्तरी आदि में हिस्सा लेते है। अन्य दिनों की तरह ही शनिवार के दिन भी विद्यार्थियों को विद्यालय में उपस्थिति जरूरी होती है।

Saturday Activities का मुख्य उद्देश्य बच्चों को पढ़ाई के साथ-२ सहगामी गतिविधियों में भी अग्रसर करना है। तथा उनका सर्वांगीण विकास करना है।

OTHER ACTIVITIES

1 NOVEMBER हरियाणा दिवस ⟹

30 October को स्कूल में हरियाणा दिवस बनाया गया। 1 नवंबर को हरियाणा दिवस पर हरियाणा में सरकारी अवकाश होने के कारण 31 अक्तुबर को स्कूल में हरियाणा दिवस मनाया गया।

सभी बच्चों को Hall में एकत्रित किया गया तथा प्रधानाचार्य द्वारा हरियाणा दिवस पर भाषण दिया गया।

14 NOVEMBER बाल दिवस ⟹

स्कूल में 14 नवंबर को बाल-दिवस के मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें स्कूल के सभी बच्चों ने भाग लिया।

कुछ बच्चों ने चाचा नेहरू के बारे में भाषण दिया। कुछ

ने सांस्कृतिक नाटक में भाग लिया। छोटे बच्चों ने चाचा नेहरु से संबंधित कविताएं सुनाई,

अनेकों शिक्षकों ने प्राध्यानाचार्य सहित बाल दिवस पर भाषण दिया।

AIDS AWARENESS ⇒ विद्यालय में 1 दिसम्बर को एड्स-दिवस पर भाषण कार्यक्रम रखा गया। बच्चों को भाषण द्वारा Morning Assembly में Aids Awareness की जानकारी दी गई, तथा विद्यार्थियों द्वारा भी भाषण दिया गया।

13 January लोहड़ी ⇒ 13 January को स्कूल में बच्चों तथा शिक्षकों द्वारा मिलकर लोहड़ी का त्योहार मनाया गया। शिक्षकों ने सभी बच्चों को इस त्योहार के उपलक्ष पर मुंगफली तथा मिठाईयां बांटी।

26 JANUARY गणतंत्र दिवस ⇒ 26 जनवरी को स्कूल में गणतंत्र दिवस मनाया

गया। बच्चों ने शिक्षकों की मदद से गणतंत्र दिवस की तैयारी एक सप्ताह पहले ही शुरू कर दी थी।

गणतंत्र दिवस पर प्रधानाचार्य द्वारा भाषण देकर सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

बच्चों को संविधान के बारे में जानकारी दि गई। बच्चों ने नाटक, कहानी, कविता, निबंध आदि में भाग लिया।

30 JANUARY ⟹ 30 January को विद्यालय में मौन सभा का आयोजन किया गया क्योंकि 30 जनवरी के ही दिन 1948 में नाथुराम गोडसे ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की गोली मारकर हत्या कर दी थी।

30 जनवरी को विद्यालय के प्रांगण में सभी बच्चों को इकट्ठा करके मौन किया गया तथा मुख्य अध्यापक द्वारा भाषण किया गया।

ATTENDANCE REGISTER

विद्यालयों की कार्यप्रणाली को सुचारू रूप से चलाने के लिए उपस्थिति रजिस्टर बहुत जरूरी होते है
प्रत्येक विद्यालय में दो तरह के उपस्थिति रजिस्टर जरूर पाये जाते है

1 छात्रों की उपस्थिति रजिस्टर ।

2. अध्यापकों की उपस्थिति रजिस्टर ।

1 **STUDENT ATTENDANCE REGISTER** => इस प्रकार के रजिस्टर की हर स्तर के विद्यालय में व्यवस्था होती है यह अत्यंत महत्वपूर्ण रजिस्टर होता है। जो Class Incharge को सौंप दिया जाता है
मुख्य रूप से इस रजिस्टर का काम छात्रों की उपस्थिति जानने से संबंधित होता है। अध्यापिका प्रतिदिन दो बार इसमें छात्रों की उपस्थिति भरते है प्रत्येक महीने के अन्त में Class

Incharge. छात्रों की उपस्थिति का मध्यमान निकालता है प्रधानाचार्य के हस्ताक्षर करवाने से पहले Incharge उस पर किसी भी अध्यापक के निरीक्षक के रूप में हस्ताक्षर करवाता है जो अनिवार्य है।

TEACHERS ATTENDANCE REGISTER →

प्रत्येक विद्यालय में अध्यापकों की उपस्थिति रजिस्टर का भी विधान होता है यह रजिस्टर लिपिक कक्ष या मुख्याध्यापक कक्ष में रहता है। इसमें वि अध्यापक विद्यालय में पहुंचने तथा विद्यालय छोड़ने का समय भरता है

अध्यापकों की छुट्टियों का उल्लेख भी इसी रजिस्टर में होता है। इससे प्रधानाचार्य का अन्य शिक्षकों के विद्यालय में आने तथा छोड़ने संबंधी समय का पता चलता है यदि कोई अध्यापक निरन्तर देरी से आता है तो मुख्याध्यापक उसे लिखित में देरी से आने का कारण मांग सकता है।

MORNING

ASSEMBLY

विद्यालय में प्रातः कालीन सभा के बाद ही विद्यालय का कार्य प्रारंभ होता है यह विद्यालय की प्रथम क्रिया है यह विद्यालय की समूची दिन-चर्या को व्यवस्था और उत्साह प्रदान करती है।

इस प्रातः कालीन सभा में सभी छात्र-छात्राएं, अध्यापक, मुख्याध्यापक और विद्यालयों के सभी कर्मचारी विद्यालय प्रांगण में एकत्रित होकर ईश्वर की वंदना करते हैं।

* राष्ट्रीय गान सावधान होकर पूरी धुन और जोश से गाया जाता है।

* विद्यालयों में प्रतिदिन बदल कर प्रार्थना अलग-2 कक्षाओं के बच्चों द्वारा गाई जाती है।

* गायत्री मंत्र का तीन बार शुद्ध उच्चारण किया जाता है।

* देश भक्ति के उत्साहवर्धक नारे लगाए जाते हैं जिससे सभी में देश भक्ति की भावना तथा उत्साह आ सके।

* प्रातः कालिन सभा में प्रतिदिन अलग-२ कक्षा के बच्चों को कविता, संगीत चुटकले और उत्साहवर्धक भाषण देने का अवसर दिया जाता है।

* प्रातः कालीन सभा में मुख्याध्यापक या अन्य अध्यापक विद्यालय संबंध सूचना तथा दिशा निर्देश देते है।

* साप्ताहिक प्रतियोगिताओं के पुरस्कार प्रातः कालीन सभा में दिए जाते है।